भाग ख ः सैद्धांतिक

द्वितीय अध्याय

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

2.1 सर्वेक्षण

2.1.1 सर्वेक्षण ः अर्थ एवं परिभाषा

2.1.2 सर्वेक्षण ः अवधारणा एवं उद्देश्य

2.1.3 प्रक्रिया

2.1.4 प्रकार

2.2 वर्णनात्मक सर्वेक्षण

2.2.1 अर्थ एवं परिभाषा

2.2.2 उद्देश्य

2.2.3 अवधारणा ः विशेष संदर्भ-ग्रंथ

2.2.4 संबंधित मुख्य सिद्धान्त

2.2.5 प्रक्रिया का विवरण

2.2.6 सामान्य शोध-कार्य में उपयोगिकता और महत्त्व

2.3 सूचीकरण ः विस्तृत अभिप्राय

2.4 वर्गीकरण ः व्यापक अभिप्राय

2.4.1 परिभाषा

2.4.2 मुख्य प्रकार

2.4.3 सारणीयन ः व्यापक अर्थ

2.4.4 वर्गीकरण ः उद्देश्य एवं महत्त्व

2.5 शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

2.5.1 अवधारणा

2.5.2 शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया

2.5.3 शोध के संदर्भ में शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन का महत्त्व

2.1 सर्वेक्षण ः

2.1.1. अर्थ एवं परिभाषा ः

"आदर्श हिन्दी शब्दकोश" के अनुसार "सर्वेक्षण" शब्द का अर्थ है- "इस प्रकार निरीक्षण करना कि पूरी तरह जानकारी प्राप्त हो सके।"[1] हरदेव बाहरी द्वारा रचित "बृहत अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश भाग **2**" के अनुसार सर्वेक्षण शब्द का अर्थ है- "किसी वस्तु की अवस्था, आकार आदि का निरीक्षण, परीक्षा, जांच-पड़ताल, पड़ताल का विवरण, पर्यालोचन, दृष्टिक्षेपण, सामान्य दृष्टिकोण, नजर डालना आदि।"[2] श्याम सुन्दर दास द्वारा सम्पादित "हिन्दी शब्द सागर" भाग **4** के अनुसार सर्वेक्षण का अर्थ "भूमि की नाप जोख"[3]। कालिदास प्रसाद, राज वल्लभ सहाय तथा मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव द्वारा संपादित "बृहत हिन्दी कोश" में सर्वेक्षण का अर्थ 'पर्यालोचन' स्वीकार किया गया है, जिसका अर्थ "किसी काम को या किसी क्षेत्रादि को आदि से अंत तक एक छोर से दूसरे छोर तक स्थूल रूप में देखना, जांचना तथा समझना दिया गया है।"[4]

"डिक्शनरी ऑफ ऑक्सफोर्ड" के अनुसार- "व्यक्तियों के किसी समूह के विचारों, आचरणों आदि के अध्ययन को सर्वेक्षण कहा जाता है।"[5]

"डिक्शनरी ऑफ सोशियोलोजी" के अनुसार- "एक समुदाय के संपूर्ण जीवन या उसके किसी एक पक्ष के संबंध में व्यवस्थित और पूर्ण तथ्य संकलन और तथ्य विश्लेषण का नाम ही सर्वे क्षण है।"[6] ...*

---

[1] पाठक, प्रो. रामचन्द्र (सम्पादक), **2008**, आदर्श हिन्दी शब्दकोश, वाराणसी ः भार्गव बुक डिपो, पृष्ठ-**749**

[2] बाहरी, डॉ. हरदेव (सम्पादक), **2009**, बृहत अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश भाग **2**, दिल्ली ः राजपाल एण्ड सन्ज, पृष्ठ-**1217**

[3] दास, श्याम सुन्दर (सम्पादक), **1968**, हिन्दी शब्द सागर, भाग **4**, वाराणसी ः काशी नागरी प्रचारिणी सभा, पृष्ठ-**3480**

[4] प्रसाद, कालिदास, सहाय, राज वल्लभ तथा श्रीवास्तव, लाल, मुकुन्दी (सम्पादक), **1952**, बृहत् हिन्दी कोश, बनारस, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, पृष्ठ-**1219**

[5] कुमार, डॉ. सुरेश और सहाय, डॉ. रमानाथ (सम्पादक), **2008**, डिक्शनरी ऑफ ऑक्सफोर्ड, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ-**994**

[6] उदधृत, शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, शोध-प्रविधि ः सिद्धान्त एवं प्रक्रिया, चण्डीगढ़ ः अ ण पब्लिशिंग हाऊस प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ-**52**

...* उपरोक्त सामग्री की सूचना के लिए शोधार्थी शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद की पुस्तक 'शोध-प्रविधि ः सिद्धान्त एवं प्रक्रिया' का ऋणी है।

"कम्पेनियन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ साइकोलॉजी, भाग- **2**" के अनुसार (Companion Encyclopedia of Psychology, Volume2), "सर्वेक्षण पद्धति साधारण खोज पर आधारित है। जिसमें एक विशिष्ट तरीके से प्रश्न पूछे जाते हैं और लोगों से जानकारी प्राप्त की जाती है।"[7]

डॉ. मनमोहन सहगल द्वारा रचित "हिन्दी शोध-तंत्र की रूपरेखा" के अनुसार 'सर्वेक्षण' का सामान्य अर्थ - "किसी तत्त्व को समूचेपन में देखना, जांचना या परखना है।"[8] बैजनाथ सिंहल द्वारा रचित "शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि" के अनुसार- "सर्वेक्षण-पद्धति का अनुसरण, साहित्य के किसी कालखंड, अंग, विधा, आंदोलन अथवा प्रवृत्ति का क्रमबद्ध विवरण उपस्थित करने में किया जाता है।"[9]

डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा द्वारा रचित "शोध-प्रविधि" के अनुसार- "सर्वेक्षण-पद्धति में समग्र साहित्य या उसके किसी कालखंड का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जाता है।"[10]

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार 'सर्वेक्षण' शब्द का अर्थ- "किसी विषय को सामान्य रूप में देखना, निरीक्षण करना, अवलोकन करना तथा जांच-पड़ताल द्वारा उसके संबंध में क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित जानकारी प्राप्त करना है।"[11]

डॉ. विनयमोहन शर्मा द्वारा रचित "शोध-प्रविधि" के अनुसार- "इसका प्रयोग शिक्षा तथा समाजशास्त्रीय विषयों में होता है। इसमें समाज से संबद्ध तथ्यों का निरीक्षण और संकलन किया जाता है। उसका सामान्य सांख्यिकी से संबंध रहता है। यह निश्चित समस्या का सावधानीपूर्ण विश्लेषण सहित तर्कपूर्ण हल प्रस्तुत करता है। इस प्रणाली के अन्तर्गत शैक्षणीय, समाजशास्त्रीय, अर्थशास्त्रीय, भाषा-विज्ञान आदि सर्वे सम्पन्न होते हैं।"[12]

---

[7] Colman, Andew M., 2009, Companion Encyclopedia of Psychology, Volume2, London, Routledge Companion Encyclopedias, पृष्ठ-**1063**

[8] सहगल, डॉ. मनमोहन, **2008**, हिन्दी शोध-तंत्र की रूपरेखा, जयपुर, पंचशील प्रकाशन, पृष्ठ-**109**

[9] सिंहल, बैजनाथ, **2008**, शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, नयी दिल्ली ः वाणी प्रकाशन, पृष्ठ-**25**

[10] वर्मा, डॉ. हरिश्चन्द्र, **2006**, शोध-प्रविधि, पंचकुला ः हरियाणा साहित्य अकादमी, पृष्ठ-**112**

[11] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**52**

[12] शर्मा, डॉ. विनयमोहन, **2008**, शोध-प्रविधि, दिल्ली ः नेशनल पेपरबैक्स, पृष्ठ-**12**

डॉ. मैथिली प्रसाद भारद्वाज ने सर्वेक्षण को समन्वेषी अभिकल्प की पद्धति मानते हुए कहा है कि "समन्वेषी अभिकल्प का उद्देश्य विषय का परिचय देना, विषय का निरूपण करना, संप्रत्ययों का स्पष्टीकरण करना, नए संप्रत्ययों की खोज करना तथा परिकल्पनाओं और सिद्धान्तों का निर्माण करना है।"[13]

www.businessdictionary.com में सर्वेक्षण शब्द के विषय में वर्णित है- "यह एक समाजशास्त्रीय पद्धति है। जिसमें जांच-पड़ताल के दौरान पूछे गए प्रश्नों के आधार पर यह जानकारी प्राप्त करना कि लोग कैसे सोचते और व्यवहार करते हैं। उदाहरण के तौर पर- व्यापार के संदर्भ में एक शोधकर्ता देखता है कि मास-मीडिया जनता के स्वरूप और विचारों को कैसे परिवर्तित और प्रभावित करता है"[14]

www.socialresearchmethods.net में सर्वेक्षण का अभिप्राय है- "शोध सर्वेक्षण का सामाजिक सर्वे में मापन के क्षेत्र में बहुत महत्त्व है। शोधकर्ता विस्तृत क्षेत्र में जाकर लोगों से साक्षात्कार करता है। एक नियमबद्ध तरीके से प्रश्न पूछता है और निष्कर्ष निकालता है।"[15]

www.wikieducator.org में सर्वेक्षण के विषय में लिखा है- "सर्वेक्षण-पद्धति लोगों के मध्य जाकर जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रयोग की जाती है। सामान्य तौर पर इसमें इकट्ठी की गई जानकारी का वर्णन किया जाता है।"[16]

---

[13] भारद्वाज, **डॉ. मैथिली प्रसाद, 2005,** शोध-प्रविधि, पंचकुला ः आधार प्रकाशन, पृष्ठ-**43**

[14] A method of sociological investigation that uses question based or statistical surveys to collect information about how people think and act. For example, a possible application of survey research to a business context might involve looking at how effective mass media is in helping form and shift public opinion. (स्वयं अनुवाद)
http://www.businessdictionary.com/definition/survey- research.html, 24/01/2013 को देखा

[15] Survey research is one of the most important areas of measurement in applied social research. The broad area of survey research encompasses any measurement procedures that involve asking questions of respondents. A "survey" can be anything form a short paper-and-pencil feedback form to an intensive one-on-one in-depth interview. (स्वयं अनुवाद)
http://www.socialresearchmethods.net/kb/survey.php, 24/01/2013 को देखा

[16] Survey studies are usually used to find the fact by collecting the data directly from population or sample. It is the most commonly used descriptive method in educational researches. The researcher collects the data to describe the nature of existing condition or look forward the standards against existing condition or determine the relationships that exists between specific events. (स्वयं अनुवाद)
http://wikieducator.org/Survey_Research, 24/01/2013 को देखा

अतः कहा जा सकता है कि 'सर्वेक्षण' शब्द का अर्थ- किसी विषय, वस्तु का क्रमबद्ध, व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक विधि द्वारा निरीक्षण करना होता है। इसमें सर्वेक्षक क्षेत्र में जाकर साक्षात्कार करता है, प्रश्न पूछता है और इनके प्राप्त उत्तरों के आधार पर निष्कर्ष निकालता है। इसमें किसी क्षेत्र या विषय का आदि से लेकर अंत तक बाहरी अध्ययन किया जाता है। इसमें समाज में संबंधित समस्याओं और तथ्यों का अनुशीलन किया जाता है। यह एक सामान्य अध्ययन है।

2.1.2. अवधारणा एवं उद्देश्य ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- "सर्वेक्षण एक प्रकार का साधन है जिससे समाज स्वयं को तुलनात्मक स्तर पर होने वाले कार्यों व परिवर्तनशील घटकों संबंधी प्रभूत ज्ञान से सम्पृक्त रखता है।"[17] सर क्लाज मोजर के अनुसार- "नियम की किसी स्थिति विशेष की प्राकल्पना, दो वस्तुओं के जटिल अन्तर्संबंध की वैज्ञानिक व्याख्या इसी से संभव है, जैसे अर्थशास्त्रीय दृष्टि से दो उद्योगों के पारस्परिक साम्य-वैषम्य की स्थिति आदि। व्यापारी ये जानने के इच्छुक होते हैं कि उनके उद्योगों, फर्मों की स्थिति क्या है? सरकार लोगों की संख्या और उनके जीविकोपार्जन के साधनों के प्रति व्यग्र रहती है। इसी प्रकार अन्य महत्त्वपूर्ण पक्षों एवं विषयों यथा- राजनीति, चुनाव, निरस्त्रीकरण नीति, यौन-व्यवहार आदि पर समाज पारम्परिक रीति-रिवाजों व विद्वानों के विचारों पर आश्रित नहीं रह सकता। ऐसी अवस्था में सर्वेक्षण ही तथ्यों का प्रस्तुतीकरण कर उसे नवीन दिशा-बोध देता है। मोटे रूप में सर्वेक्षण का उद्देश्य सूचना प्रदान करना ही होता है।"[18]

डॉ. एम. आर. वाजपेयी के अनुसार- "आधुनिक युग में सर्वेक्षण समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए स्थापित पद्धति बन चुका है।"[19]

शोध-प्रविधि के कारण सर्वेक्षण ने वैज्ञानिकता व क्रमबद्धता हासिल की है। डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- "सर्वेक्षण का सर्वप्रथम उद्देश्य समस्या विशेष से संबद्ध सभी तथ्यों का संकलन करना है। इस संदर्भ में प्रेक्षण एवं विचार उपयोगी हो सकते हैं, बशर्ते कि वे मान्य ठहराये जाने के लिए सत्य प्रमाणों पर आधारित हों। द्वितीयतः सर्वेक्षण में समीक्षात्मक विश्लेषण हो। सभी तथ्य

---

[17] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**53**

[18] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**53**

[19] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**53**

एक स्वस्थ उत्सुकता की दृष्टि से सम्युक्त हों। तृतीयतः सर्वेक्षण में वस्तु की सार्वजनिक उपादेयता सिद्ध हो।"[20]

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा का मत है- 'सर्वेक्षण का मूल उद्देश्य तथ्यों को इकट्ठा करना एवं प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण तथा व्याख्या करना है। इसमें प्राप्त तथ्यों को क्रमबद्ध करके उनका वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। इस तरह जो आंकड़ें प्राप्त होते हैं, वे भावी सुधारों हेतु आधारभूमि का काम करते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि सर्वेक्षण का अर्थ केवल तथ्यों को इकट्ठा करना है, बल्कि उनको वैज्ञानिक ढ़ंग से क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित करके उनकी व्याख्या-विश्लेषण करना है। इससे सही जानकारी उभर कर सामने आती है।'[21]

आजकल वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित सर्वेक्षण का चलन हो गया है। डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- "एक विषय के सभी पक्षों अथवा उसके किसी एक पक्ष के संबंध में व्यवस्थित और पूर्ण तथ्य संकलन और तथ्य विश्लेषण का नाम सर्वेक्षण है। सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त तथ्यों के आधार पर सामान्यीकरण किए जाते हैं तथा सामान्य व वैज्ञानिक नियमों का निर्माण होता है।"[22]

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा की राय के अनुसार- 'किसी विषय या मामले संबंधी नियम निश्चित करने से पूर्व उस संबंधी कुछ ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। सर्वेक्षक के समक्ष सर्वेक्षण के समय अनेक बिन्दु उभर कर सामने आते हैं, जिनका उद्देश्य समस्या का हल बताना होता है। सर्वेक्षण से विषय संबंधी बाह्य जानकारी प्राप्त होने के कारण इसकी उपयोगिता बढ़ गई है, जिससे ज्ञान में बढ़ावा होता है। इससे विषय संबंधी पूर्ण सूचना प्राप्त हो जाती है।'[23]

इस प्रकार कह सकते है कि सर्वेक्षण का उद्देश्य ऐसी सूचना प्रदान करना है, जो सत्य पर आधारित होती है तथा जिसने वैज्ञानिकता व तटस्थता अर्जित की होती है। इसमें समस्याओं का हल किया जाता है। इसमें केवल बाहरी जानकारी दी जाती है जो तथ्यों पर आधारित होती है। इसमें तथ्यों को एकत्रित किया जाता है, जिनका वैज्ञानिक तरीके से व्याख्या और विश्लेषण किया

---

[20]शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**53**

[21] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**53**

[22] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**53**

[23] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**54**

जाता है। इसमें किसी स्थिति विशेष की प्रकल्पना और दो वस्तुओं के जटिल अन्तर्संबंध की वैज्ञानिक व्याख्या कर सकते हैं। इसमें समीक्षात्मक विश्लेषण किया जाता है। इसमें जो सूचना प्राप्त होती है, वो सार्वजनिक उपादेयता वाली होती है।

2.1.3. प्रक्रिया ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- "सर्वेक्षण प्रक्रिया सर्वेक्षक से सतर्कता की अपेक्षा रखती है। इसी प्रक्रिया में तथ्यों का सही, यथारूप तथा तटस्थ विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। सभी महत्त्वपूर्ण सूचनाएं तटस्थता तथा सत्यता से प्रतिवेदित की जाती है। भ्रांतिपूर्ण, भ्रामक व त्रुटियुक्त जानकारी सर्वेक्षण को निकृष्ट, निस्पृह तथा व्यर्थ का प्रचार ही बताती है।"[24]

इसमें प्रमुख और गौण दोनों तथ्य दिए जाते हैं। केवल वही तथ्य या सूचना दी जानी चाहिए जो विषय से संबंधित हो। अन्यथा विषय भटकाव हो सकता है। डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा का मत है- "इस संदर्भ में दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रस्तुत किए गए तथ्य विशेषता सूचक हो। इसका अर्थ यह नहीं है कि गौण महत्ता वाले तथ्य दिए न जायें वरन् ऐसे दिए जायें कि प्रतिनिधित्व न कर सकें, गौण ही रहें।"[25]

जो तथ्य या सूचना दी जा रही है, वह सत्य पर आधारित हो। भ्रम पैदा करने वाली सूचना या तथ्यों का बहिष्कार कर देना चाहिए।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि सर्वेक्षण प्रक्रिया सर्वेक्षक को सतर्क रहने, मूल तथ्यों को प्रस्तुत करने तथा भ्रमित तथ्यों से बचने का आग्रह करती है। वे तथ्य दिए जायें, जो विशेषता सूचक हों। प्रमुख और गौण दोनों तथ्यों का समावेश होना चाहिए।

2.1.4. प्रकार ः

वर्तमान समय में सर्वेक्षण के अनेक रूप उभर कर सामने आए हैं। डॉ. जे. एस. शर्मा के अनुसार सर्वेक्षण के निम्न प्रकार हैं।[26]

---

[24]शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**54**

[25]पूर्वोक्त, पृष्ठ-**54**

[26] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**55**

2.1.4.1. प्रमुख ः-

1. वैश्लेषिक या समीक्षात्मक सर्वेक्षण

2. व्यवस्थित या गणनात्मक सर्वेक्षण

3. वर्णनात्मक सर्वेक्षण

4. पाठ्य सर्वेक्षण

5. आनुवर्णिक सर्वेक्षण

6. वर्गीकृत सर्वेक्षण

7. कालानुक्रमिक सर्वेक्षण

2.1.4.1.1. वैश्लेषिक या समीक्षात्मक सर्वेक्षण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा का मत है- 'वैश्लेषिक या समीक्षात्मक सर्वेक्षण शोध-प्रबंध या ग्रंथ के आंतरिक रूप से संबंध रखता है। यह केवल आंकड़ों का आकलन नहीं करता है, बल्कि तथ्यों के पारस्परिक अन्तःसंबंधों को दर्शाते हुए रचना का अध्ययन किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रंथ के गुण-दोषों का पता लगाना है। इसमें किसी शोध-प्रबंध या ग्रंथ की पड़ताल आलोचना के धरातल पर की जाती है।'[27]

2.1.4.1.2. व्यवस्थित या गणनात्मक सर्वेक्षण ः

जे. एस. शर्मा के अनुसार- "यह सर्वेक्षण अपेक्षाकृत सरलता से किया जा सकता है। इसमें संदर्भ एवं अध्ययन के उद्देश्य से पुस्तकों की जांच और उनसे प्राप्त प्रविष्टियों का एकत्रीकरण इस प्रकार किया जाता है कि उनका व्यवस्थापन साधारण भी हो सकता है और विस्तारपूर्ण भी।"[28]

इसमें प्राप्त ज्ञान को सूचीबद्ध किया जाता है। इसमें आलोचना नहीं की जाती है।

2.1.4.1.3. वर्णनात्मक सर्वेक्षण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के मतानुसार- "वर्णनात्मक सर्वेक्षण किसी ग्रंथ, कृति या विषय के बाह्य उल्लेख से संबंधित होता है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण का अर्थ है - किसी वस्तु का तत्त्वगत वर्णन करते

---

[27] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**55**

[28] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**56**

हुए उस वर्ग के घटकों का कालक्रम, वर्गक्रम आदि के आधार पर परिगणन एवं परिचय प्रदान करना है। ऐसा सर्वेक्षण वैयक्तिकता से परे व आत्मकथात्मकता से कोसों दूर होता है। सर्वेक्षक पूर्णतः तटस्थ व निस्संग रह कर किसी कृति या ग्रंथ का विश्लेषण करता है। यहां किसी विषय के विविध पक्षों के संबंध में तथ्य एकत्रित किए जाते हैं, यहां ग्रंथ के मुख्य भागों, उपभागों का सार रूप में प्रस्तुतीकरण होता है।"[29]

2.1.4.1.4. पाठ्य सर्वेक्षण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- "पाठ्य सर्वेक्षण किसी रचना के मूल पाठ से संबंधित होता है। इसका उद्देश्य किसी पाठ की परिशुद्धता या परिपूर्णता में लेखन अथवा मुद्रण-प्रक्रिया के प्रभाव का निर्धारण करना होता है।"[30] इसमें पुस्तक या उसके विविध संस्करणों में जो अन्तर है, उसको स्पष्ट किया जाता है।

2.1.4.1.5. आनुवर्णिक सर्वेक्षण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के मतानुसार- 'यह सर्वेक्षण का कोई अलग भाग नहीं है। इसका किसी भी सर्वेक्षण में प्रयोग किया जा सकता है। इसका उपयोग उस ग्रंथ-सूची के लिए किया जाता है, जहां पाठक लेखकानुसार सामग्री ढूंढ़ता है।'[31]

2.1.4.1.6. वर्गीकृत सर्वेक्षण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा लिखते हैं- 'यह क्रमबद्धता से संबंधित है। इसमें प्राप्त सामग्री को विभिन्न कृतियों, ग्रंथों आदि को विविध वर्गों में बांट कर उनका वर्गानुसार सर्वेक्षण किया जाता है। इससे शोधार्थियों को अपनी इच्छा अनुसार विषय चुनने में सुगमता रहती है।'[32]

2.1.4.1.7. कालानुक्रमिक सर्वेक्षण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- 'इसमें प्राप्त सामग्री का कालानुक्रम के आधार पर सर्वेक्षण किया जाता है। इसमें किसी विशेष अवधि में लिखी गई पुस्तकों को उस काल में रखा जाता है।'[33]

---

[29] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**56**

[30] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**57**

[31] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**57**

[32] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**57**

[33] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**57**

2.1.4.2. गौण ः-

2.1.4.2.1. व्यक्तिगत सर्वेक्षण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा का मत है कि- 'इसमें सर्वेक्षक क्षेत्र में जाकर साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त करता है। यह सर्वेक्षण का सबसे बढ़िया तरीका है, क्योंकि इससे सही जानकारी प्राप्त होती है।'[34]

2.1.4.2.2. नियमित सर्वेक्षण ः

सत्यपाल रूहेला के अनुसार- "यदि किसी समस्या पर निरन्तर या नियमित रूप से सर्वेक्षण चलता रहे तो उसे नियमित सर्वेक्षण कहते हैं। इसके लिए स्थायी विभाग होने की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ, भारत सरकार के जनगणना विभाग, आर्थिक स्तर जानने वाले विभाग, रिजर्व बैंक आदि लगातार नियमित सर्वेक्षण करवाते हैं।"[35]

2.1.4.2.3. प्रतिदर्श सर्वेक्षण ः

सत्यपाल रूहेला के अनुसार- 'इसमें क्षेत्र के सभी व्यक्तियों से जानकारी प्राप्त न करके कुछ प्रतिनिधियों को चुनकर जानकारी प्राप्त की जाती है। प्रतिदर्श का चुनाव निष्पक्षता से किया जाता है। जो जानकारी प्राप्त होती है वह उस क्षेत्र की विशिष्टता को प्रकट करती है।'[36]

2.1.4.2.4. विषयगत सर्वेक्षण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा लिखते हैं- "विविध रूपों के साथ-साथ सर्वेक्षण विविध विषयों में भी किया जाता है। साहित्य, मानविकी, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक सर्वेक्षण किया जाना संभव है। सामाजिक सर्वेक्षण न केवल समाज विज्ञान अपितु अन्य सामाजिक विज्ञानों को भी प्रभावित करता है। इन सबका एकमात्र उद्देश्य समस्या विशेष पर वास्तविक व विस्तृत तथ्यों को वैज्ञानिक ढ़ंग से एकत्रित करना है।"[37]

---

[34] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, 2011, पूर्वोक्त, पृष्ठ-57-58

[35] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-58

[36] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-58

[37] पूर्वोक्त, पृष्ठ-58

2.1.4.2.5. वर्णक्रमानुसार सर्वेक्षण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- 'यह ग्रंथ-सूची से संबंधित होता है। इसमें विषय-वस्तु का सूचीकरण आकारादिक्रम में दिया जाता है। इसका प्रयोग कालक्रमानुसार विभाजन तथा सहायक ग्रंथ-सूची में किया जा सकता है।'[38]

सर्वेक्षण के प्रमुख और गौण प्रकारों पर विचार करने के उपरांत निम्नलिखित बिन्दु उभर कर सामने आते हैं। समीक्षात्मक सर्वेक्षण में आलोचना के प्रतिमानों के आधार पर ग्रंथ या कृति का आंतरिक अध्ययन किया जाता है। गणनात्मक सर्वेक्षण में ग्रंथों की जांच और प्रविष्टियों का एकत्रीकरण किया जाता है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण में किसी ग्रथ या कृति का तत्त्वगत अध्ययन करते हुए उसका कालक्रम, वर्गक्रम के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। पाठ्य सर्वेक्षण में रचना के मूल और विभिन्न संस्करणों की निश्चितता प्रमाणित करना होता है। आनुवर्णिक सर्वेक्षण लेखकानुसार सामग्री ढूंढने में सहायता करता है। वर्गीकृत सर्वेक्षण में सामग्री को विभिन्न वर्गों में बांट का उनका वर्गानुसार सर्वेक्षण किया जाता है। कालानुक्रमिक सर्वेक्षण में प्राप्त तथ्यों का काल के अनुसार विभक्त कर उनका सर्वेक्षण किया जाता है। व्यक्तिगत सर्वेक्षण में सर्वेक्षक क्षेत्र में जाकर साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त करता है। ऐसे सर्वेक्षण जो लगातार चलते रहते हैं, उन्हें नियमित सर्वेक्षण कहते हैं। प्रतिदर्श सर्वेक्षण में किसी क्षेत्र के कुछ प्रतिनिधियों को चुनकर उनसे जानकारी प्राप्त की जाती है। विषयगत सर्वेक्षण में विषय से संबंधित तथ्यों का सर्वेक्षण किया जाता है। वर्णक्रमानुसार सर्वेक्षण में सर्वेक्षण की विषय-वस्तु का सूचीकरण आकारादि क्रम में किया जाता है।

वर्णनात्मक सर्वेक्षण की अवधारणा, प्रक्रिया व महत्त्व पर विस्तार से विचार किया गया है।

2.2. वर्णनात्मक सर्वेक्षण ः

2.2.1. अर्थ एवं परिभाषा ः

रामचन्द्र वर्मा द्वारा संपादित "संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर" के अनुसार, वर्णनात्मक शब्द का विशिष्ट अर्थ है - "वर्णन के रूप में होने वाला कार्य"[39] तथा हरदेव बाहरी द्वारा रचित "बृहत

---

[38] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**58**

[39] वर्मा, रामचन्द्र (संपादक), **2009**, संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, काशी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, पृष्ठ-**676**

अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश, भाग 2" के अनुसार 'सर्वेक्षण' शब्द का विशिष्ट अर्थ है- "किसी वस्तु की अवस्था, आकार आदि का निरीक्षण, परीक्षा, जांच-पड़ताल, पड़ताल का विवरण, पर्यालोचन, दृष्टिक्षेपण, सामान्य दृष्टिकोण, नजर डालना आदि।"[40] डॉ. ब्रहमवेद शर्मा के अनुसार- "वास्तविक जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया विस्तृत निरीक्षण ही वर्णनात्मक सर्वेक्षण होता है।"[41] डॉ. सत्यदेव के अनुसार- "किसी कार्य या घटना के विषय में प्राप्त ब्यौरेवार ज्ञान को वर्णनात्मक सर्वेक्षण कहते हैं।"[42] एस. एल. चक्रवर्ती के अनुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण का अर्थ है- "किसी वस्तु का तत्त्वगत वर्णन करते समय उस वर्ग के घटकों का कालक्रम, वर्गक्रम आदि के आधार पर परिगणन एवं व्यवस्थित परिचय प्रदान करना।"[43]

इस प्रकार वर्णनात्मक सर्वेक्षण का अर्थ है- ऐसा सर्वेक्षण जिससे विषय, घटना, क्षेत्र आदि से संबंधित तथ्यों की पूर्ण बाहरी जानकारी प्राप्त हो जाती है। इसमें विषय, घटना, क्षेत्र आदि से संबंधित प्राप्त तथ्यों का कालक्रम या वर्गगत सूचीकरण करके उनका परिचय दिया जाता है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण के द्वारा सही और पूर्ण तथ्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

2.2.2. उद्देश्य ः

डॉ. सत्यदेव के अनुसार वर्णनात्मक अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं ः-

"1. किसी समूह अथवा परिस्थिति के लक्षणों का परिशुद्ध वर्णन,

2. किसी चर(variable) की आवृति का निश्चित करना और

3. चरों के साहचर्य (association) के विषय में पता लगाना।"[44]

डॉ. सत्यदेव के अनुसार- 'किसी समूह, जैसे प्रशासन के किसी समूह, प्रशासन के किसी विभाग या राजनीतिक दल अथवा किसी परिस्थिति जैसे हड़ताल या चुनाव के विषय में हम वर्णनात्मक अध्ययन द्वारा ब्यौरेवार ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह ज्ञान गुणात्मक भी हो सकता है और

---

[40] बाहरी, डॉ. हरदेव (संपादक), 2009, पूर्वोक्त, पृष्ठ-1217

[41] शर्मा, डॉ. ब्रहमवेद, 2011, पूर्वोक्त, पृष्ठ-60

[42] सत्यदेव, 1976, सामाजिक विज्ञानों की शोध-पद्धतियां, चण्डीगढ़, हरियाणा हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ-49

[43] उदधृत, डॉ. ब्रहमवेद शर्मा, 2011, पूर्वोक्त, पृष्ठ-59

[44] सत्यदेव, 1976, पूर्वोक्त, पृष्ठ-49

मात्रात्मक भी। गुणात्मक जानकारी के अन्तर्गत हम यह पता लगा सकते हैं कि किसी चुनाव के उम्मीदवार किस-किस राजनीतिक दल के थे। मात्रात्मक जानकारी गिनने या मापने पर आधारित होती है। जैसे-अमुक हड़ताल बहुत सफल रही।"[45]

डॉ. सत्यदेव का मत है- "वर्णनात्मक अध्ययन करते समय हमें विषय या समस्या का कुछ ज्ञान रहता है। यह ज्ञान पहले किए हुए समन्वेषण या दूसरे लोगों के अध्ययनों द्वारा प्राप्त होता है। इसलिए वर्णनात्मक अध्ययन के उद्देश्य सुस्पष्ट होते हैं। जैसे यह निश्चित रहता है कि हमें किन लक्षणों का वर्णन करना है। इसी प्रकार किन चरों की आवृति देखनी है, यह निश्चित रहता है। किसी एक ही समूह का अध्ययन अलग-अलग दृष्टिकोणों से हो सकता है और प्रत्येक के लिए भिन्न चरों की आवृति देखनी होती है। प्रत्येक प्रकार के अध्ययन के उद्देश्य भिन्न होंगे, अर्थात् अलग-अलग चरों का अध्ययन किया जाएगा।"[46]

इसके अतिरिक्त वर्णनात्मक सर्वेक्षण का एक और उद्देश्य है- चरों के साहचर्य के विषय में पता लगाना। जैसे- जहां गरीबी होगी वहां के लोग अनपढ़ ज्यादा होंगे। जहां लोगों में अनपढ़ता ज्यादा होगी वहां जादू-टोनों में लोगों का विश्वास ज्यादा होगा। डॉ. सत्यदेव के अनुसार- "वर्णनात्मक अध्ययन का एक और उद्देश्य है चरों के साहचर्य का पता लगाना जैसे पिछड़े देशों में आय और शिक्षा में घनात्मक साहचर्य पाया जाता है, अर्थात् अमीर लोग साधारणतया अधिक पढ़े-लिखे होते हैं। इसी प्रकार विभिन्न चरों के साहचर्य का पता लगाया जाता है, अर्थात् यह देखते हैं कि साहचर्य है या नहीं और यदि है तो किस प्रकार का है। वर्णनात्मक अध्ययन परिकल्पनाओं का परीक्षण करता है। आगे बढ़कर ऐसा अध्ययन कार्य-कारण संबंधी परिकल्पनाओं के निर्माण में सहायक होता है।"[47]

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि वर्णनात्मक सर्वेक्षण का उद्देश्य किसी समूह या परिस्थितियों के लक्षणों का वर्णन करना, चरों की आवृति को निश्चित करना तथा चरों के साहचर्य का पता लगाना है।

---

[45] सत्यदेव, **1976**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**49**

[46]पूर्वोक्त, पृष्ठ-**50**

[47]पूर्वोक्त, पृष्ठ-**50**

2.2.3. अवधारणा ः विशेष संदर्भ-ग्रंथ

पुस्तकों के संदर्भ में, यह किसी शोध-प्रबंध या पुस्तक के बाहरी रूप से संबंध रखता है। इसमें किसी शोध-प्रबंध या पुस्तक के आन्तरिक पक्ष का वर्णन न करके बाहरी, स्थूल एवं ऊपरी जानकारी प्रदान की जाती है।

इसमें विषय का विश्लेषण एवं समीक्षा न करके केवल सक्षिप्त वर्णन किया जाता है। डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- "वर्णनात्मक सर्वेक्षण में निर्दिष्ट विषय या कृति का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है, उसका विश्लेषण या समीक्षा करना इसका लक्ष्य नहीं है।"[48]

डॉ ब्रह्मवेद शर्मा की राय है- "विषयपरक होने के कारण वैयक्तिकता से अछूता रहता है। इसमें सर्वेक्षक या शोधार्थी को मूल विषय के संबंध में व्यक्तिगत विचार प्रकट करने का अवकाश नहीं होता, न ही वह लेखक के विचारों से सहमति या असहमति प्रदर्शित कर सकता है।"[49]

इस प्रकार वर्णनात्मक सर्वेक्षण में शोध-प्रबंध या पुस्तक के आन्तरिक पक्ष का वर्णन न करके केवल बाहरी रूप का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है। इसमें शोधार्थी वैयक्तिकता से परे रहता है। इसमें शोधार्थी अपने विचार नहीं दे सकता, चाहे वो लेखक के विचारों से सहमत हो या न हो।

2.2.4. संबंधित मुख्य सिद्धांत ः

वर्णनात्मक सर्वेक्षण में शोध-कार्य को क्रमबद्ध व वैज्ञानिक रूप में व्यवस्थित किया जाता है। इसके मुख्य सिद्धान्त निम्न हैं -

"1. वर्णनात्मक सर्वेक्षण करते हुए किसी मद की महत्त्वपूर्ण विशेषता का उल्लेख किया जाता है, जिससे अन्य मदों से उसका विभेद हो सके तथा इसके क्षेत्र, अंतर्वस्तु एवं ग्रंथात्मक संबंधी विवरण को अन्य मदों से संबंधित करना स्पष्ट हो सके।

2. प्रविष्टियों में इस आधार सामग्री को इस प्रकार प्रस्तुत करना ताकि इनको प्रविष्टियों की अन्य मदों के साथ सूची में समन्वित किया जा सके और पाठक को उनका पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके।

3. परिपूर्ण प्रति के वर्णन का प्रयास किया जाता है।

---

[48]शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, 2011, पूर्वोक्त, पृष्ठ-60

[49]पूर्वोक्त, पृष्ठ-61

4. वर्णन की सीमा, आधार-सामग्री तथा अभिव्यक्ति में मितव्ययित का ध्यान रखते हुए उपर्युक्त उद्देश्य की प्राप्ति हेतु मद का उतना वर्णन प्रस्तुत करना जितना आवश्यक हो।

5. मूल लेखक जो कहना चाहता है वही वर्णनात्मक सर्वेक्षण करने वाले की आधार सामग्री है। मूल लेखक की बात को बदलने का उसे कोई अधिकार नहीं होता। अस्पष्ट या अबोधगम्य वर्णन को स्पष्टीकरण द्वारा दूर किया जा सकता है।

6. ऐसा सर्वेक्षण तटस्थता व निस्संगता पूर्वक ही किया जा सकता है। उसमें लेखक विशेष या कृति विशेष से प्रतिबद्धता या लगाव न हो।

7. प्रविष्टि में वर्णनात्मक तत्त्वों को इस क्रम से आयोजित किया जाता है, जिससे उपभोक्ताओं की आवश्यकताएं पूर्ण हो सकें।

8. इस प्रकार के सर्वेक्षण में सूचना के स्रोत का उल्लेख तभी करना चाहिए, जब सूचना शंकास्पद या स्रोत असाधारण जान पड़े।

9. वर्णनात्मक सर्वेक्षण करते हुए सभी प्रविष्टियों के लिए एकरूप शैली अपनाई जानी चाहिए। आत्मकथात्मक शैली से बचना चाहिए।

10. शोध-ग्रंथ या अन्य कृति के प्रति निर्णय-निर्धारण में आत्म-अभिव्यंजना का अभाव होना चाहिए।

11. वर्णनात्मक सर्वेक्षण में शोधार्थी को कृति व ग्रंथ के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण नहीं रखना चाहिए। उसे मात्र उसका संक्षिप्त विवरण देना है न कि समीक्षा करनी है।

12. वर्गीकरण वर्णनात्मक सर्वेक्षण का अनिवार्य तत्त्व है। बिखरी व फैली हुई तथ्य सामग्री को व्यवस्थित रूप प्रदान करने, उसके तत्त्वों की समानता और असमानता को स्पष्ट करने, उसकी परस्पर तुलना करने, सामग्री को शीघ्र ग्राह्य और स्थायी रूप से स्मरणीय बनाने के लिए उसका वर्गीकरण करना महत्त्वपूर्ण होता है। ऐसा करने से जहां बिखरी हुई सामग्री के एकत्रीकरण में सहायता मिलती है, वहीं शोध-कार्य वैज्ञानिकता व क्रमबद्ध व्यवस्था से मुक्त हो जाता है।

13. वर्गीकरण के साथ-साथ सूचीकरण का भी वर्णनात्मक सर्वेक्षण में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि वह वर्गीकरण का पूरक बनकर आता है। ठोस व पूर्ण सूचीकरण उन कमियों को दूर करता है जिनकी पूर्ति वर्गीकरण से संभव नहीं।

14 वर्णनात्मक सर्वेक्षण को सरल व सुबोधगम्य बनाने हेतु सर्वेक्षक सारणियों फलतः चित्रों आदि का उपयोग कर सकता है। इससे तथ्यों व तर्कों के प्रस्तुतीकरण में वैज्ञानिकता का प्रणयन होगा। क्रमबद्ध व सारपूर्ण अभिलेख में यह सहायक होगा। सारणियों का आश्रय लेकर पाठक सहज ही विविध वर्षों में कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकता है।"[50]
वर्णनात्मक सर्वेक्षण संबंधी उपरोक्त सभी नियमों, सिद्धांतों के परिपालन से ही शोध गरिमा सुरक्षित रह सकेगी।

इस प्रकार वर्णनात्मक सर्वेक्षण में किसी मद की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख किया जाता है, ताकि इसका अन्य मदों से विभेद हो सके। प्राप्त सामग्री को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि वह अन्य मदों के साथ सूची में समन्वित हो सके। इसमें पुस्तक या ग्रंथ का पूर्ण परिचय दिया जाता है। इसमें लेखक की मूल बात का ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है। इसमें शोधार्थी तटस्थ रहकर कृति का सर्वेक्षण करता है। इसमें सूचना के स्रोत का वर्णन तभी किया जाता है, जब सूचना शंकास्पद हो। इसमें एकरूप शैली का प्रयोग किया जाता है। इसमें आलोचनात्मक पद्धति का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसमें सामग्री को एकत्रित करके उसका विभिन्न वर्गों में वर्गीकरण किया जाता है। इसमें प्राप्त सामग्री का सूचीकरण भी किया जाता है।

2.2.5. प्रक्रिया का विवरण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा का प्रक्रिया के संबंध में मत है- "वर्णनात्मक सर्वेक्षण आधुनिक युग में ज्ञान प्राप्ति का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। इसमें विशिष्ट विषय को इस प्रकार निरूपित किया जाता है कि उसके समस्त संश्लेष प्रकट हों तथा साथ ही उन संश्लेषों के समस्त शीर्षकों तथा उपशीर्षकों में विद्यमान लक्ष्यों की समस्त सूचना प्राप्त हो सके।"[51]

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण की प्रक्रिया सर्वेक्षक से सतर्कता की अपेक्षा रखती है। इसलिए शोधार्थी को सामग्री एकत्रित करने के स्रोतों, व्यवस्थापन विधि, सारणीकरण, सूचीकरण प्रविधि आदि का उचित ज्ञान प्राप्त होना चाहिए। इससे शोध-कार्य क्रमबद्धता व वैज्ञानिकता हासिल कर सकता है'[52]

---

[50] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**60-62**
मद (शीर्षक या विषय)

[51] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**62**

[52] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**62**

सत्यपाल रूहेला का मत है- "वर्णनात्मक सर्वेक्षण में जो कुछ अवलोकित किया जाता है, वह वर्तमान स्थितियों और समस्याओं से संबंधित तथ्यों का संगठन होता है। किसी भी दिए गए क्षेत्र की वर्तमान अवस्थाओं का मूल्यांकन करने में सर्वेक्षण की इस प्रक्रिया को काम में लाया जा सकता है और इस प्रकार यह प्रक्रिया एक ऐसा पैमाना प्रस्तुत करती है जिससे भविष्य में विकास, विशेषकर वह जो एक विशेष कार्यक्रम से होता है, नापा जा सकता है।"[53]

निष्कर्षतः वर्णनात्मक सर्वेक्षण में विषय का इस तरह वर्णन किया जाता है कि विषय संबंधी सभी तथ्य उभर कर सामने आ जाए। इसमें शोधार्थी को सचेत रहना पड़ता है। शोधार्थी को ये ज्ञात होना चाहिए कि उसने सामग्री कहां से इकट्ठी करनी है। किस तरीके से करनी है। कौन-सी विधि द्वारा करनी है। उसको सूचीकरण प्रविधि का भी पता होना चाहिए। इसमें जो तथ्य प्रस्तुत किए जाते हैं, वे वर्तमान परिस्थितियों और समस्याओं से संबंधित होते हैं।

वर्णनात्मक सर्वेक्षण की प्रक्रिया के विभिन्न सोपान निम्न हैं-

2.2.5.1. कार्य की पूर्ण योजना ः

आयोजना के संबंध में सत्यपाल रूहेला लिखते हैं- 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण शुरू करने से पहले इसकी योजना तैयार कर लेनी चाहिए। संकलन कार्य की सफलता उचित योजना पर निर्भर करती है। शोधार्थी को अपने विषय संबंधी अंतिम योजना बनानी चाहिए, जिसे अनुभव के माध्यम से परिमार्जित किया जा सके। बाद में भी समय और कार्य के विषय में लगाए गए अनुपयुक्त अनुमान को निरंतर जांच और कार्य की प्रगति की पुनः परीक्षा द्वारा ठीक किया जा सकता है।'[54]

2.2.5.2. कार्य संबंधी क्षेत्र-निर्धारण ः

क्षेत्र-निर्धारण के संबंध में डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा की टिप्पणी है- 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व इसका क्षेत्र निर्धारित कर लेना चाहिए। विषय ऐसा होना चाहिए कि उसका निर्धारित समय में सर्वेक्षण हो सके। सर्वेक्षक को अपने सर्वेक्षण क्षेत्र का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इससे विषय संबंधी भटकाव खत्म हो जाता है। सर्वेक्षण की आयोजना को ध्यान में रखकर तथा कार्य अनुसूची बनाते हुए क्षेत्र का निर्धारण करना चाहिए।'[55]

---

[53] उद्धृत, शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**62**

[54] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**63**

[55] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**63**

2.2.5.3. वर्णनात्मक सर्वेक्षण संबंधी पद्धति का पूर्णज्ञान ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा 'पद्धति का पूर्णज्ञान' के संबंध में लिखते हैं- 'सर्वेक्षण में सर्वेक्षक को पद्धति का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। ऐसी पद्धति का प्रयोग करना चाहिए जो सरल हो तथा जिससे सफलता प्राप्त हो सके। पद्धति का चुनाव सर्वेक्षक के उद्देश्य एवं प्राप्त किए जाने वाले तथ्यों पर निर्भर करता है। सर्वेक्षक को पद्धति का सूक्ष्म ज्ञान होना चाहिए। उसे ज्ञात होना चाहिए की इस सर्वेक्षण में कौन-सी पद्धति उपयोगी होगी और उसका निर्वाह कैसे किया जाएगा। वर्णनात्मक सर्वेक्षण में शोध-प्रबंधों के बाहरी रूप का परिचय दिया जाता है। इसमें सर्वेक्षक वैयक्तिकता से परे रहता है।'[56]

2.2.5.4. सामग्री-संकलन ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा का सामग्री संकलन के संबंध में मत है- 'सर्वेक्षक को अपने विषय संबंधी सामग्री का संकलन इस प्रकार करना चाहिए की कोई सामग्री छूट न जाए। उसे पता होना चाहिए की विषय संबंधी सामग्री कहां उपलब्ध होगी। उसके स्रोत कौन-कौन से हैं। इसमें सर्वेक्षक स्वयं अपने निर्धारित क्षेत्र में जाकर तथ्यों को एकत्रित करता है।'[57]

2.2.5.5. ग्रंथ व्यवस्था का परिचय शोध-ग्रंथों के संदर्भ में ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण में पुस्तक के ग्रंथपरक विवरणों का अभिलेख प्रस्तुत किया जाता है। इसमें कृति का यथारूप प्रस्तुत किया जाता है। शोध-प्रबंध के विषय में इसके मुखपृष्ठ से परिशिष्ट तक के सभी भागों व उपभागों का वर्णन किया जाता है।'[58]

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा की राय है- "किसी प्रबंध का वर्णनात्मक सर्वेक्षण करते हुए सर्वप्रथम शोधार्थी का नाम, शोध-प्रबंध का शीर्षक, विश्वविद्यालय व उपाधि नाम, निर्देशक तथा वर्ष का उल्लेख किया जाता है। तत्पश्चात् संपूर्ण प्रबंध के कुल कितने पृष्ठ हैं, कितने अध्याय हैं, इसकी गणना की जाती है। यह भी दर्शाया जाता है कि शोध-प्रबंध कितने भागों में विभक्त है। तत्पश्चात् प्राक्कथन की संक्षिप्त जानकारी दी जाती है। इसके बाद अध्यायीकरण आता है। अध्याय की

---

[56] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**63-64**

[57] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**64**

[58] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**64**

विषय-वस्तु क्या है, उसमें कितने उपशीर्षक हैं, आदि का वर्णन किया जाता है। तत्पश्चात् परिशिष्टि की जानकारी दी जाती है, जिसमें आधार ग्रंथ-सूची व सहायक संदर्भ-सूची दी जाती है।"[59]

2.2.5.6. सूचीकरण अर्थात् तालिका निर्माण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के मतानुसार- "वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रक्रिया में सूचीकरण का विशेष महत्त्व रहता है क्योंकि यह एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा किसी मद के संपूर्ण संग्रह संबंधी अधिकतम सूचना यथासंभव न्यूनतम समय में मिल जाती है। एक विश्वविद्यालय में प्राप्त शोध-प्रबंधों को सूचीकरण व्यवस्थित व क्रमबद्ध रूप प्रदान करता है, जिससे शोधार्थियों को अपेक्षाकृत सुविधा हो जाती है।"[60]

2.2.5.7. वर्गीकरण ः

वर्गीकरण के संबंध के डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा का मत है- 'वर्गीकरण का वर्णनात्मक सर्वेक्षण में बहुत महत्त्व है। वर्गीकरण में प्राप्त सामग्री को काल, गुण, विशेषताओं आदि की समानता के आधार पर भिन्न-भिन्न श्रेणियों में क्रमबद्ध किया जाता है, जिससे वैज्ञानिकता बनी रहती है।'[61]

2.2.5.8. सारणीयन ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण में सारणीयन का सहारा भी लेना पड़ता है। सारणीयन में वर्गीकरण द्वारा की गई विवेचना को निश्चित रूपरेखा प्रदान की जाती है। सारणीयन द्वारा क्रमानुसार व सुव्यवस्थित तरीके से तथ्यों को संकलित करने में मदद मिलती है। इसमें वैज्ञानिक पद्धति से कार्य होता है।'[62]

2.2.5.9. वर्णनात्मक सर्वेक्षण की शैली ः

शैली के संबंध में डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के विचार हैं- 'इसकी शैली आलोचना से परे होती है। इसमें सर्वेक्षक तटस्थ रहकर वर्णन करता है। इसमें किसी कृति संबंधी उत्तम, बढ़िया, गलत आदि

---

[59] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**64**

[60] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**65**

[61] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**65**

[62] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**65**

शब्दों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। इसमें लेखक अपने विचार प्रकट नहीं कर सकता है। जो लेखक के विचार है उन्ही को प्रकट करना होता है। 'ऐसा है' इसकी शैली है।'[63]

2.2.5.10. निष्कर्षो का प्रस्तुतीकरण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- 'सर्वेक्षक तथ्यों के संकलन, निरीक्षण एवं वर्गीकरण के पश्चात् निष्कर्ष पर पहुंचता है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रक्रिया का निष्कर्ष स्पष्ट, सही तथा तथ्यों पर आधारित होना चाहिए। ऐसे निष्कर्षो से बचना चाहिए जो भ्रम पैदा करने वाले हों। इसमें तथ्यों का वैज्ञानिक ढ़ंग से संकलन करने के पश्चात् उनको सार संक्षेप रूप में प्रस्तुत किया जाता है।'[64]

निष्कर्षतः वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रक्रिया में इन सभी सोपानों का अनुपालन किया जाता है। इसमें शोधार्थी को सबसे पहले योजना तैयार करनी होती है। उसे अपने सर्वेक्षण के क्षेत्र का भी पता होना चाहिए। सर्वेक्षक को सर्वेक्षण पद्धति का भी पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। सर्वेक्षक को ये पता होना चाहिए कि उसके शोध से संबंधित सामग्री कहां उपलब्ध है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण में शोधार्थी के नाम से लेकर सहायक ग्रंथ-सूची तक का वर्णन किया जाता है। प्राप्त सामग्री को सूचीबद्ध किया जाता है। उपलब्ध तथ्यों को विभिन्न वर्गो में विभक्त कर उनका वर्गीकरण किया जाता है। इसमें आलोचनात्मक शैली का उपयोग नहीं किया जाता है। अंत में प्राप्त तथ्यों का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है। यह तथ्यों पर आधारित होता है।

2.2.6. सामान्य शोध-कार्य में उपयोगिता एवं महत्त्व ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- "वर्णनात्मक सर्वेक्षण का शोध-कार्य में बहुत महत्त्व है। शोध का लक्ष्य है अज्ञात तथ्यों को ज्ञात करवाना तथा ज्ञात तथ्यों का पुनर्मूल्यांकन करना है। निरंतर बढ़ते हुए ज्ञान को उपयोगी एवं कार्यकारी बनाने के लिए आवश्यक है कि उसे सुसंगठित किया जाए।"[65] वर्तमान समय में अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी साहित्य में शोध-कार्य हो रहा है। शमशेर गुप्ता के अनुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण की उपयोगिकता एवं महत्त्व निम्न है -

"1. सुगमतापूर्वक किसी भी विषय संबंधी रचनाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

---

[63] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, 2011, पूर्वोक्त, पृष्ठ-65

[64] पूर्वोक्त, पृष्ठ-65-66

[65] पूर्वोक्त, पृष्ठ-66

2. समय का सदुपयोग इसका अभीष्ट है। ज्ञान की वृद्धि हेतु यथा ज्ञानोपलब्धि हो सकती है।

3. किसी भी विषय संबंधी समस्त ग्रंथों को समग्र पढ़ने की अपेक्षा निर्दिष्ट स्थलों को देखकर ही कार्य-सिद्धि की जा सकती है।

4. शोध-कार्य में अनावश्यक पिष्टपेषण से बचा जा सकता है।

5. शोध-क्षेत्र में पुनरावृति की संभावनाएं शून्य हो जाती है।"[66]

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के मतानुसार- 'शोध-प्रबंधों के निर्माण में यह पद्धति बहुत लाभदायक है। क्षेत्र चाहे कोई भी हो, सभी में सामग्री तथा तथ्यों का संकलन, प्रभावीकरण एवं वर्गीकरण बहुत जरूरी है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रक्रिया में ये सभी तत्त्व समाहित है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण में तथ्यों का सही, क्रमबद्ध, व वैज्ञानिक विवेचन किया जाता है। किसी ग्रंथ या वस्तु का तत्त्वगत, कालक्रमानुसार व वर्गानुसार वर्गीकरण किया जाता है। यह ज्ञान प्राप्ति का सबसे प्रबल साधन है। इससे शोधार्थी का भटकाव खत्म हो जाता है। शोध-क्षेत्र में जो ज्ञान वृद्धि हुई है उसे वर्णनात्मक सर्वेक्षण के द्वारा भावी शोधार्थियों तक पहुंचाया जा सकता है।'[67]

रा. रंगनाथन तथा मुरारिलाल नागर के अनुसार- "कुछ प्राचीन शोध-प्रबंध प्रकाश में नहीं आते। उनका पर्यालोचन करते समय यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि कौन-सा अध्याय तथा सूचनार्थ विषय पाठकों के ध्यान में लाने योग्य है। सम्भवतः उन वस्तुओं को वर्णनात्मक सर्वेक्षण द्वारा खोज लेने पर उनके पाठक होने की संभावना है। प्रत्येक पाठक को भी अपने ग्रंथ पाने की अच्छी संभावना रहेगी।"[68]

निष्कर्षतः वर्णनात्मक सर्वेक्षण का मुख्य महत्त्व अज्ञात तथ्य को ज्ञात करना तथा ज्ञात तथ्यों की नवीन व्याख्या करना है। इससे किसी भी क्षेत्र और विषय संबंधी आसानी से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इससे विषय संबंधी जानकारी एक ही स्थान पर प्राप्त हो जाती है। इससे समय का सदुपयोग होता है। इससे अनावश्यक पिष्टपेषण से बचा जा सकता है। शोध-क्षेत्र में पुनरावृति की

---

[66] उद्धृत, शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**66**

[67] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**67**

[68] रंगराथन, रा. तथा नागर, मुरारि लाल, **1951**, ग्रंथालय प्रक्रिया, देहली, भारतीय ग्रन्थालय संघ, पृष्ठ-**31**

संभावनाएं ख़त्म हो जाएंगी। इसमें तथ्यों का क्रमबद्ध व वैज्ञानिक वर्णन किया जाता है। इसमें पुस्तक या ग्रंथ का कालक्रमानुसार व वर्गानुसार वर्गीकरण किया जाता है।

2.3. सूचीकरण ः विस्तृत अभिप्राय

'सूची बनाने की प्रक्रिया का नाम सूचीकरण है। यह अंग्रेजी के शब्द "**केटलॉग**" का हिन्दी अनुवाद है। जो **ग्रीक** भाषा के '**कैटलोगस**' शब्द से रूपान्तरित है। "**केटा**" का अर्थ है- **अनुसार** और "**लोगस**" का अर्थ है- **क्रमबद्ध और तर्क**। इस प्रकार कैटलॉग शब्द का सामान्य अर्थ क्रमबद्ध और तर्कपूर्ण विधि के अनुसार बनी हुई सूची से है।'[69] "सम्पूर्ण अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश" के अनुसार '**Catalogue'** शब्द का हिन्दी में अर्थ है- "सूचीपत्र, सूची, तालिका।"[70] "प्रामाणिक हिन्दीकोश" के अनुसार 'सूची' शब्द का अर्थ है- "किसी विषय की मुख्य-मुख्य बातों की क्रम में दी हुई सूची।"[71] "हिन्दी शब्दसागर भाग- 4" के अनुसार 'सूची' शब्द का अर्थ है- "एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों या उनके अंगों, विषयों आदि की नामावली।"[72]

गिरजा कुमार, कृष्ण कुमार तथा प्रेमकुमार जयसवाल के अनुसार- "विषय सूची का मूल उद्देश्य किसी ख़ास विषय में एक प्रलेख या एक समूह के प्रलेखों का प्रत्यक्ष तथा शीघ्र अभिगम (approach) प्रस्तुत करना होता है।"[73]

पुस्तकालयों में पुस्तकों की व्यवस्थित व क्रमबद्ध जानकारी सूचीकरण के द्वारा ही संभव है। सूची का मुख्य उद्देश्य पाठक को पुस्तक के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है।

"सूचीकरण का संबंध किसी वस्तु के संलेख से होता है। इसलिए वह मुख्य विषय में बाधा पहुंचाए बिना जितने शीर्षकों में आवश्यक समझता है उस वस्तु का सूचीकरण कर सकता है और

---

[69] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**68**

[70] तिवारी, डॉ. भोलानाथ, कपूर, अमरनाथ तथा गुप्त, विश्वप्रकाश (सम्पादक), **2000**, सम्पूर्ण अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश, नई दिल्ली, किताबघर प्रकाशन, पृष्ठ-**182**

[71] वर्मा, रामचन्द्र, **1950**, प्रामाणिक हिन्दीकोश, बनारस, साहित्य रत्नमाला कार्यालय, पृष्ठ-**1355**

[72] दास, श्याम सुन्दर, **1968**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**3640**

[73] कुमार, गिरजा, कुमार, कृष्ण तथा जयसवाल, प्रेमकुमार, **1976**, सूचीकरण के सिद्धान्त, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि., पृष्ठ-**77**

निर्देश बना सकता है। उसका कार्य यह है कि वह उस वस्तु के विवरण का लेखा एक निश्चित एवं सुव्यवस्थित क्रम में रखें जिससे जिज्ञासु व्यक्तियों को किसी वस्तु के विविध पक्षों की संपूर्ण जानकारी एक ही स्थान पर मिल सके।"[74]

आजकल सभी विश्वविद्यालयों के लिए ये जरूरी हो गया है कि या तो वे अपने द्वारा किए गए शोथ-कार्य की सूचियां बनाए अथवा यू. जी. सी. आदि संस्थाओं द्वारा बनाई की सूचियों में अपना योगदान दें। कम्प्यूटरीकरण के दौर में ये काफी आसान हो गया है। पंजाब विश्वविद्यालय की शोध-पत्रिका प्रत्येक वर्ष हिन्दी में होने वाले शोध-कार्य को वर्षानुक्रम में सूची के रूप में प्रकाशित करती रही है। शोध-संदर्भ जैसे निजी प्रयासों की चर्चा पीछे हो चुकी है। जाहिर है कि इस तरह की सूचियों का भावी शोधार्थियों को लाभ होता है तथा वे नए तथा मौलिक शोध-विषयों की ओर अग्रसर हो सकते हैं। वर्णनात्मक सर्वेक्षण में पहला मुख्य कार्य सूचीकरण ही है। द्वारका प्रसाद शास्त्री के अनुसार- "सूचीकरण वर्गीकरण का पूरक है। बहुत कुछ ऐसी बातें हैं जो सूचीकरण कर सकता है किन्तु वर्गीकरण इसे नहीं कर सकता। अतः ठोस अैर पूर्ण सूचीकरण की यही विशेषता है कि वह उन कमियों की पूर्ति कर दे जो कि वर्गीकरण द्वारा संभव नहीं है।"[75]

निष्कर्षतः वर्णनात्मक सर्वेक्षण में सूचीकरण का अहम रोल है। इसमें किसी विषय में एक प्रलेख या एक समूह के प्रलेखों का प्रत्यक्ष तथा शीघ्र अभिगम प्रस्तुत किया जाता है। इसका संबंध वस्तु के संलेख से है। यह वर्गीकरण का पूरक है तथा अपने लचीलेपन के कारण ये वर्गीकरण से आगे निकल जाता है। इस शोध-प्रबंध में पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में संपन्न पीएच. डी. संबंधी शोध-कार्य का वर्षानुक्रम तथा लेखक आकारादिक्रम में सूचीकरण किया गया है। यह भावी शोधार्थियों के लिए बहुत लाभदायक है। इससे उन्हें शोध का विषय चुनने में सुगमता रहती है। यही सूचीकरण का उद्देश्य है।

---

[74] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**69**

[75] शास्त्री, द्वारका प्रसाद, **1959**, पुस्तकालय सूचीकरण कला, इलाहाबाद, राजकीय केन्द्रीय पुस्तकालय, पृष्ठ-**22**

2.4. वर्गीकरण ः व्यापक अभिप्राय

2.4.1. परिभाषा ः

वर्गीकरण **अंग्रेजी** के "**क्लासीफिकेशन**" शब्द का हिन्दी पर्याय है। "**हिन्दी शब्द सागर**" के अनुसार "**वर्गीकरण**" का अर्थ है- "वस्तुओं को विभिन्न वर्गों में बांटना।"[76]

"**मानक हिन्दी कोश**" में इस की परिभाषा कुछ इस प्रकार है-

"गुण-धर्म, रंग-रूप, आकार-प्रकार आदि के आधार पर वस्तुओं आदि के भिन्न-भिन्न वर्ग बनाना, वर्गीकरण है।"[77] शशिभूषण सिंह के अनुसार- "किसी विषय पर सर्वेक्षण कार्य के समय संग्रहीत की हुई सामग्री अधिकाशतः बड़ी मात्रा में और बिखरी हुई दशा में होती है। इसमें किसी भी तरह की व्यवस्था देखने को नहीं मिलती है। अतः विश्लेषण काम के लिए उन्हें सीधे तौर पर प्रयोग नहीं किया जा सकता है। उन्हें उपयोगी बनाने के लिए समस्त संग्रहीत तथ्यों को उनकी समानता, भिन्नता अथवा अन्य किसी आधार पर कुछ निश्चित श्रेणियों में व्यवस्थित करना जरूरी हो जाता है। यही प्रक्रिया वर्गीकरण कहलाती है।"[78]

इस प्रकार वर्गीकरण का अर्थ वस्तुओं या ग्रंथों को विभिन्न वर्गों में विभक्त करना है। इसमें वस्तुओं या ग्रंथों को समानता व गुणों के आधार पर अलग-अलग वर्गों में बांटा जाता है।

2.4.2. मुख्य प्रकार ः

वर्गीकरण दो प्रकार का होता है।

1. स्वाभाविक वर्गीकरण

2. कृत्रिम वर्गीकरण

द्वारका प्रसाद शास्त्री वर्गीकरण के उपयुक्त दो भेद स्वीकार करते हैं। उनके मतानुसार- "वस्तुओं की अत्यधिक समानता और असमानता के आधार पर साधारण ज्ञान की प्राप्ति के लिए मानसिक संकलन को स्वाभाविक वर्गीकरण कहा जाता है तथा जो मानसिक संकलन की समानता के

---

[76] दास, श्याम सुन्दर, **1972**, हिन्दी शब्द सागर-नवां भाग, वाराणसी ः काशी नागरी प्रचारिणी सभा, पृष्ठ-**4378**

[77] वर्मा, रामचन्द्र, **1966**, मानक हिन्दी कोश-पांचवा खण्ड, प्रयाग ः हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पृष्ठ-**16**

[78] सिंह, शशिभूषण, **2012**, शोध-प्रविधि, नई दिल्ली, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, पृष्ठ-**137**

आधार पर विशेष उद्देश्य से व्यावहारिक सुलभता के लिए किया जाता है, उसे कृत्रिम वर्गीकरण कहते हैं।"[79]

'इस शोध-प्रबंध में विवेच्य विश्वविद्यालयों में संपन्न शोध-कार्य का विभिन्न वर्गों में विभक्त किया गया है। इसे कृत्रिम वर्गीकरण कहते हैं, क्योंकि इसका उपयोग व्यावहारिक सुविधा के लिए किया जाता है।'[80]

सत्यपाल रूहेला गुण व संख्या के आधार पर वर्गीकरण के अधोलिखित दो भेद स्वीकार करते हैं।[81] -

1. गुणात्मक वर्गीकरण
2. संख्यात्मक वर्गीकरण

1. गुणात्मक वर्गीकरण ः

गुणों के आधार पर वर्गीकरण करने को गुणात्मक वर्गीकरण कहते हैं। सत्यपाल रूहेला ने गुणात्मक वर्गीकरण के आगे दो प्रकार माने हैं-

"1. भिन्नता के आधार पर वर्गीकरण- किसी एक विशेष गुण की उपस्थिति या अनुपस्थिति को बतलाने के लिए इसे बनाया जाता है। इसमें 'हां' और 'नहीं' के दो वर्ग बनते है।जैसे- भारतीय और अभारतीय।

2. गुणों के आधार पर वर्गीकरण - इस प्रणाली में दो से अधिक गुणों के आधार पर वर्गीकरण होता है, जैसे- एक समूह के लोगों का वर्गीकरण शिक्षा, लिंग, रोजगार व स्वास्थ्य-सभी के आधार पर एक साथ करने का प्रयास किया जाए।"[82]

2. संख्यात्मक वर्गीकरण ः

'संख्यात्मक वर्गीकरण में अंको के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है।'[83]

---

[79] शास्त्री, द्वारका प्रसाद, **1967**, पुस्तकालय विज्ञान परिचय, इलाहाबाद, नरेन्द्र प्रकाशन, पृष्ठ-**290**

[80] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**70**

[81] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**71**

[82] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**71**

[83] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**71**

इस प्रकार वर्गीकरण के मुख्यतः दो प्रकार माने गए हैं- स्वाभाविक और कृत्रिम वर्गीकरण। साधारण ज्ञान प्राप्त करने के लिए किए गए मानसिक संकलन को स्वाभाविक तथा विशेष उद्देश्यों से व्यावहारिक सुलभता के लिए किया गया संकलन कृत्रिम वर्गीकरण कहलाता है। भिन्नता और गुणों के आधार पर किए गए वर्गीकरण को गुणात्मक वर्गीकरण तथा अंकों के आधार पर किए गए वर्गीकरण को संख्यात्मक वर्गीकरण कहते हैं।

2.4.3. सारणीयन ः व्यापक अर्थ

सत्यपाल रूहेला के अनुसार- "सारणीयन वह प्रविधि या तरीका है जिससे वर्गीकरण की हुई विवेचना को निश्चित रूपरेखा प्रदान की जाती है तथा समान और तुलना योग्य इकाइयों को उचित स्थान पर रखा जाता है।"[84]

'सारणीयन में किसी समस्या को स्पष्ट रूप देने के लिए आंकड़ों को नियमित तथा सुव्यवस्थित रूप दिया जाता है। इसमें गणनात्मक तथ्यों को ऐसा वैज्ञानिक व व्यवस्थित प्रदर्शित किया जाता है कि समस्या स्पष्ट हो जाए।'[85]

'सारणीयन में आंकड़ों का स्पष्ट तथा व्यवस्थित रूप प्रकट किया जाता है, जिससे समस्या का रूप स्पष्ट हो जाता है। सारणीयन में आंकड़ों को सारणी के रूप में पेश किया जाता है।'[86]

डॉ. सोहन लाल तातेड़ और डॉ. सुशील भन्दल के अनुसार- "सारणी आंकड़ों को पंक्ति तथा खानों में व्यवस्थित करने का एक साधन है। सारणीयन का तात्पर्य तालिका या सारणी बनाने से है।"[87]

निष्कर्षतः सारणीयन में आंकड़ों को निश्चित रूपरेखा प्रदान की जाती है। इसमें एक समान व तुलना योग्य इकाइयों को एक स्थान पर रखा जाता है। इसमें समस्या को स्पष्ट करने के लिए तथ्यों को नियमित तथा सुव्यवस्थित रूप दिया जाता है। इसमें आंकड़ों को सारणी में प्रस्तुत किया जाता है।

---

[84] उदधृत, शर्मा, डॉ. ब्रहमवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**71**

[85] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**71**

[86] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**71**

[87] तातेड़, डॉ. सोहन राज, भन्दल, डॉ. सुशील, **2015**, सामाजिक अनुसंधान की शोध विधियां, जयपुर, अनु प्रकाशन, पृष्ठ-**128**

2.4.4. वर्गीकरण ः उद्देश्य एवं महत्त्व ः

वर्णनात्मक सर्वेक्षण में वर्गीकरण की महत्ता असंदिग्ध है। "तथ्य सामग्री के वर्गीकरण का कार्य कुछ निश्चित उद्देश्यों के लिए किया जाता है। बिखरी व फैली हुई तथ्य सामग्री को व्यवस्थित रूप प्रदान करने, उसके तत्त्वों की समानता और असमानता को स्पष्ट करने, उसकी परस्पर तुलना करने, सामग्री को शीघ्र ग्राह्य और स्थायी रूप से स्मरणीय बनाने के लिए वर्गीकरण करना वांछनीय होता है।"[88]

द्वारका प्रसाद शास्त्री के अनुसार- "वर्गीकरण एक-एक वस्तु एवं विचार का समूह बनाकर स्मरणीय शक्ति को सहायता पहुंचाता है। वर्गों, वस्तुओं एवं भावों के पारस्परिक संबंध को भी यह प्रकट करता है और उसके नियमों की खोज की ओर ले जाता है।"[89]

"वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रक्रिया में वर्गीकरण शोध-विषय की संश्लिष्टता का विश्लेषण करके उसका सांगोपांग पूर्ण चित्र प्रस्तुत किया जाता है। यह शोधक में आग्रह, संस्कार एवं व्यक्तिगत अभि चि के स्थान पर वस्तु मूलक तटस्थ एवं निर्भय दृष्टि को स्थापित करता है। वर्गीकरण प्रत्येक तथ्यांश की गुणात्मक स्वतंत्र परख करता है। शोध-विषय में स्पष्टता, पूर्णता, व्यवस्था एवं क्रमात्मकता वर्गीकरण से आती है। यह विषय में स्थूलता के स्थान पर सूक्ष्मता, सामान्यत्व के स्थान पर विशिष्टता तथा परीक्षता के स्थान पर प्रत्यक्षता एवं अंतरंग निरीक्षण की स्थिति उत्पन्न करता है"[90]

निष्कर्षतः वर्णनात्मक सर्वेक्षण में वर्गीकरण का बहुत महत्त्व है। इसमें बिखरी हुई सामग्री को इकट्ठा करके, समानता और असमानता के आधार पर उनको विभिन्न वर्गों में विभक्त किया जाता है। इसमें वस्तु एवं विचार का एक समूह बनाया जाता है। इससे वर्गों व वस्तुओं के पारस्परिक संबंधों को भी प्रकट किया जाता है। इसमें शोध-प्रबंध की संश्लिष्टता का विश्लेषण किया जाता है। यह शोधार्थी में तटस्थ तथा निर्भय दृष्टि को स्थापित करता है। इसमें प्रत्येक

---

[88] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**72**

[89] शास्त्री, द्वारका प्रसाद, **1958**, पुस्तक वर्गीकरण कला, वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पृष्ठ-**16**

[90] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**72**

तथ्यांश की गुणों के आधार पर स्वंतत्र परख की जाती है। इससे शोध-विषय में तटस्थता आती है। इससे विषय में सूक्ष्मता व विशिष्टता की स्थिति आ जाती है।

2.5. शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन ः

2.5.1. अवधारणा ः

शोध-प्रक्रिया शोध-कार्य का वह रास्ता है जिस पर चलकर शोधार्थी अच्छे या बुरे शोध निष्कर्षों तक पहुंचता है। शोध संबंधी कार्य में समरूपता, अनुशासन और प्रामाणिकता लाने के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत शोध-मानकों व प्रविधियों को मानना न केवल जरूरी है बल्कि पीएच. डी. शोध-कार्य के लिए यह एक अनिवार्यता भी होती है। यह सच है कि शोध-प्रक्रियात्मक के मापदण्डों के केन्द्र में विज्ञान और समाज विज्ञान रहते हैं किन्तु साहित्यिक शोध उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता। ख़ास तौर पर जब आज का भाषायी शोध समाज-विज्ञानों से भी गहरे रूप से जुड़ा है। इसलिए विश्वविद्यालयों में होने वाले शोध-कार्य का सर्वेक्षण करते हुए साथ ही साथ उनका शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन करना उपयोगी होगा।

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के इस संबंधी विचार है- "मानक शोध-प्रविधि की महत्ता और उपयोगिता को रेखांकित करते हुए भी यह सत्य है कि शोध-प्रविधि स्वयं में साध्य न होकर साधन मात्र ही है। अयोग्य और दृष्टिहीन शोधकों के हाथ में पड़कर स्तरीय प्रविधि भी निर्जीव यांत्रिकता में परिणत हो जाएगी। ऐसी स्थिति में सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि शोध के क्षेत्र में चुने हुए अधिकारी शोधार्थियों को ही प्रवेश पाने दिया जाए। शोध-प्रविधि की सच्ची सार्थकता शोधार्थी की दृष्टि संपन्नता की सापेक्षता में ही सिद्ध होती है। अगर शोधार्थी अपने शोध-प्रबंध की रचना मानक शोध-प्रक्रिया के अनुरूप करेगा तभी वह उत्तम शोध-प्रबंध का प्रणयन करने में सक्षम होगा तथा शोध-कार्य की दृष्टि से उसका प्रयास सार्थक होगा।"[91]

वे आगे लिखते हैं- "विषय-चयन, तथ्यों के संग्रहन और सत्यापन, प्राप्त सामग्री का विश्लेषण, शोध-प्रबंधों के प्रस्तुत करने का ढ़ंग, निष्कर्ष, मुख-पृष्ठ, टंकण-नियम, पाद-टिप्पणी

---

[91] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**76**

भाषा शैली आदि में घोर अराजकता व असंतुलन के प्रमाण हिन्दी के शोध-प्रबंधों में आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।"[92]

निष्कर्षतः शोध के क्षेत्र में उत्कृष्ट और उत्तम शोध-प्रबंध लिखने में शोध-प्रविधि का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। इसके अभाव में शोध-प्रबंधों की गरिमा का हनन होता है। जो शोध-प्रबंध मानक शोध-प्रविधि के अनुरूप लिखे जाते हैं, वे उत्तम शोध-प्रबंध का परिगणन करने में सक्षम होते हैं।

2.5.2. शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया ः

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया को समझने से पहले '**शोध**' और '**शोध-प्रबंध**' शब्दों पर विचार कर लेना होगा।

2.5.2.1. शोध ः

'शोध' शब्द "**शुद्ध**" धातु से व्युत्पन्न हुआ है। "**शुद्ध**" का मौलिक अर्थ है- "शुद्ध करना, परिमार्जित करना, संदेह रहित बनाना या प्रामाणिक घोषित करना।"[93]

"सम्पूर्ण अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश" के अनुसार, शोध के अंग्रेजी समकक्ष **'Research'** शब्द का हिन्दी में अर्थ है- "खोज, छानबीन, अनुसंधान, रिसर्च, अन्वेषण, गवेषण ।"[94] 'हिन्दी का 'अनुसंधान' अंग्रेजी के **'रिसर्च'** का हिन्दी रूपान्तर है। अंग्रेजी का **'रिसर्च'** शब्द भी दो शब्दों के योग से बना है। इसमें **'रि'** उपसर्ग है जिसका अर्थ दुबारा और वापस होता है तथा **'सर्च'** मूल शब्द है जो **फ्रेंच** भाषा के शब्द **'कर्च'** तथा **'चर्च'** से प्रादुर्भूत है जिसका अर्थ खोजना तथा व्यवस्थित करना होता है।'[95] "प्रामाणिक हिन्दीकोश" के अनुसार 'शोध' शब्द का अर्थ है- "जांच, परीक्षा, खोज, तलाश।"[96] "हिन्दी शब्दसागर भाग- **4**" के अनुसार 'शोध' शब्द का अर्थ है- "जांच, परीक्षा, खोज, ढूंढ़, तलाश, अनुसंधान, अन्वेषण।"[97]

---

[92] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**76-77**

[93] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**77**

[94] तिवारी, डॉ. भोलानाथ, कपूर, अमरनाथ तथा गुप्त, विश्वप्रकाश (सम्पादक), **2000**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**1099**

[95] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**77**

[96] वर्मा, रामचन्द्र, **1950**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**1231**

[97] दास, श्याम सुन्दर, **1928**, हिन्दी शब्द सागर, भाग-**4**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**3383**

एस. एन. गणेशन के अनुसार- "अनुसंधान अथवा शोध उस प्रक्रिया या कार्य का नाम है जिसमें बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उनका अवलोकन-विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धान्तों का उद्घाटन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, पहले अज्ञात वस्तुओं, तथ्यों या सिद्धान्तों के आविष्कार की बोधपूर्वक क्रिया ही अनुसंधान है।"[98]

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि शोध का अर्थ खोजना तथा व्यवस्थित करना है। इसमें तथ्यों का संकलन करके उनका विश्लेषण किया जाता है। इसका उद्देश्य विषय से संबंधित सच को उजागर करना, भ्रांति को दूर करना, संबंधित तथ्यों की व्याख्या करना, पुराने तथ्यों को नवीनता प्रदान करना तथा अज्ञात तथ्यों को ज्ञात करके उन्हें प्रामाणिकता प्रदान करना है।

2.5.2.2. शोध-प्रबंध ः अभिप्राय

एस. एन. गणेशन ने शोध-प्रबंध की परिभाषा निम्न रूप में दी है - "अनुसंधान के परिणामों को लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे शोध-प्रतिवेदन कहा जाता है। व्यापक विषयों पर विवरणात्मक प्रबंध के रूप में रिर्पोट प्रस्तुत की जाए, तो उसे शोध-प्रबंध कहा जाता है।"[99]

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा ने शोध-प्रबंध के लिए हिन्दी और अंग्रजी शब्दों का रिश्ता जोड़ते हुए लिखा है- 'हिन्दी का शोध-प्रबंध शब्द अंग्रेजी 'थीसिस' का हिन्दी रूपान्तर है। 'थीसिस' शब्द का मूल अर्थ है - प्रतिज्ञा, विचार, तत्त्व-चिन्तन अवधारणा आदि। शोध के क्षेत्र में इसका अर्थ है - वह शोध-प्रबंध जो शोधार्थी की एक निश्चित प्रतिज्ञा, चिंतन, विचार तत्त्व अथवा अवधारणा का परिणाम होता है।'[100]

2.5.2.3. शोध-प्रबंध ः विभिन्न अंग

जोगेश कौर के अनुसार सामान्यतः शोध-प्रबंध के अंग निम्नलिखित हैं-[101]

(अ) पूर्व भाग

1. मुखपृष्ठ
2. प्रस्तावना
3. विषय-सूची

---

[98] उदधृत, शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**77-78**

[99] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**78**

[100] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**78**

[101] उदधृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**78**

4. तालिकाओं (यदि हो तो) की सूची

5. चित्र-सूची (यदि हो तो)

6. चित्र संक्षिप्त-सूचनाएं आदि।

(आ.) मुख्य भाग

1. विषय की भूमिका या विषय-परिवेश

2. विषय के विविध पहलुओं से संबंधित अध्ययन

3. निष्कर्ष।

(इ) पश्च भाग

1. विविध अनुबंध

2. सहायक ग्रंथ-सूची

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार शोध-प्रबंध का वैज्ञानिक विभाजन निम्न है-

"**प्राक्कथन**

विषयानुक्रमणिका

भाग-एक- भूमिका

इसके अन्तर्गत तीन अध्याय आते हैं-

1 विषय-उपस्थापन

2. सैद्धान्तिक-परिप्रेक्ष्य

3. लेखकीय-परिप्रेक्ष्य

भाग-दो- विवेचन भाग

इसके अंतर्गत **6** अध्याय होते हैं।

भाग-तीन-समाहार

उपसंहार

भाग-चार-परिशिष्ट

सहायक ग्रंथ-सूची"[102]

---

[102] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011,** पूर्वोक्त, पृष्ठ-**79**

निष्कर्षतः एक शोध-प्रबंध के उपर्युक्त अंग होते हैं। मुख्यतः एक शोध-प्रबंध **4** खंडों में विभक्त होता है। प्रथम खंड विषय-उपस्थापन होता है। इसमें **1** अध्याय होता है। द्वितीय खंड सैद्धान्तिक होता है। इसमें **2** से **3** अध्याय होते हैं। तृतीय खंड व्यावहारिक होता है। इसमें **3** से **6** तक अध्याय होते हैं। चतुर्थ खंड परिशिष्ट होता है। इसमें **1** से **2** अध्याय होते हैं।

2.5.2.4. शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन ः विभिन्न सोपान

एक शोध-प्रबंध को शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन की कसौटी पर परखने के लिए उसे विभिन्न सोपानों में से गुजारा जाता है। शोध-प्रबंध में शोधार्थी ने मानक शोध-प्रविधि का पालन किया है या नहीं। अगर किया है तो किस सीमा तक किया है। उसका प्रबंध शोध-गरिमा के अनुरूप है या नहीं। इस प्रक्रिया में शोध-प्रबंध का मुखपृष्ठ से लेकर परिशिष्ट तक मूल्यांकन किया जाता है। डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया के निम्न सोपान निर्दिष्ट करते हैं[103]-

1. मुख-पृष्ठ ः

सर्वप्रथम मुखपृष्ठ का विवेचन किया जाता है। मुखपृष्ठ संबंधी नियम हैं-

"**1.** शोध-प्रबंध का शीर्षक ऊपर से **2** इंच नीचे दिया जाना चाहिए। यदि शीर्षक एक पंक्ति से बड़ा हो तो उसे उल्टी समाधि में लिखा जाना चाहिए।

2. मध्य में उपाधि का नाम दिया जाता है। फिर संस्था और वर्ष का उल्लेख किया जाता है।

3. शोधार्थी का नाम।

4. अगर शोधार्थी चाहे तो अपनी पूर्वार्जित उपाधियों का वर्णन कर सकता है। शीर्षक बड़े टाईपों में होना चाहिए। अन्य विवरण उचित छोटे टाईपों में छापे जाते हैं।"[104]

2. प्राक्कथन ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा की मत है- 'प्रायः इसके दो भाग होते हैं- विषय-उपस्थापन और आभार। विषय-उपस्थापन में विषय के चयन तथा कार्य के चयन के प्रेरक तत्त्वों का वर्णन किया जाता है। अंत में शोधार्थी अपने सहयोगियों के प्रति आभार प्रकट करता है। आभार पूरी ईमानदारी से परन्तु

---

[103] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011,** पूर्वोक्त, पृष्ठ-**80**

[104] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**80**

बहुत संक्षिप्त और सरल शब्दों में हो। पूरे शोध-प्रबंध में यही वह भाग है जहां शोधार्थी वैयक्तिक रूप में लिख सकता है।'[105]

3. विषय-सूची ः

एस. एन. गणेशन के मतानुसार- "शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत शोध-ग्रंथ की विषय-सूची विस्तृत होनी चाहिए। उसमें केवल अध्यायों के नामों का ही नहीं सभी खण्डों और उप-खण्डों के नामों का उल्लेख होना चाहिए। इसमें शीर्षक, उप-शीर्षक, अध्यायों आदि की पृष्ठ संख्या दी जानी चाहिए। प्रायः सुविधा के लिए मात्र अध्यायों की पृष्ठ संख्या दी जाती है। इसमें उप-भागों के पुनरवलोकन में कठिनाई होती है।"[106]

4. अध्यायीकरण ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा लिखते हैं- 'शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन की कसौटी में यह परखा जाता है कि अध्यायीकरण उचितक्रम में है या नहीं। इसमें अध्याय संख्या व शीर्षक के अलावा उपशीर्षक भी दिए जाते हैं। शोध का प्रबंध कुल अध्यायों में समाहित हो जाना चाहिए। हरेक अध्याय की अपनी एक सीमा होनी चाहिए। एक अध्याय में केवल एक ही विषय होना चाहिए।'[107]

5. पृष्ठांकन ः

पृष्ठांकन संबंधी डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा का मत है- 'प्रत्येक पृष्ठ क्रमांकित होना चाहिए। विषय उपस्थापन को अलग पृष्ठ संख्या दी जाती है। अध्याय के प्रथम पृष्ठ पर अध्याय संख्या नहीं दी जाती है, लेकिन उसको गिना अवश्य जाता है। पृष्ठ का क्रमांक हर पृष्ठ के ऊपर दायें कोने पर दिया जाता है। यह ऊपर से और दायें से एक इंच के अन्तर पर होता है'[108]

6. पाद-टिप्पणी ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- "प्रायः शोध-प्रबंधों में पाद-टिप्पणियों का निर्वाह शोध-नियमों के अनुकूल नहीं होता। पाद-टिप्पणी पृष्ठ के पांव में अर्थात् नीचे दी जाने वाली टिप्पणी

---

[105] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**80**

[106]उद्धृत, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**81**

[107] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**81**

[108] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**81**

होती है। पाद-टिप्पणी में लेखक का नाम, प्रकाशन वर्ष, रचना का नाम, प्रकाशन स्थान, प्रकाशन संस्था तथा पृष्ठ संख्या दी जाती है। पाद-टिप्पणी जब बार-बार आए तो केवल 'वही' तथा पृष्ठ संख्या लिखकर रेखांकित करना चाहिए। पाद-टिप्पणी यदि एक जगह छोड़कर आए तो लेखक, वर्ष, पूर्वोक्त तथा पृष्ठ संख्या दी जानी चाहिए।"[109]

7. उपसंहार ः

उपसंहार संबंधी डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा की राय है- 'उपसंहार के **3** भाग हैं- अध्ययन का सार, निर्णय एवं उपलब्धियां तथा शोध-संकेत। ज्यादातर शोध-प्रबंधों में शोध-संकेत नहीं दिए गए होते हैं। शोध-संकेत भावी शोधार्थियों को विषय-चयन में सहायता प्रदान करते हैं। इसलिए शोध-संकेत बहुत आवश्यक हैं।'[110]

8. सहायक संदर्भ-सूची ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- 'सर्वप्रथम आलोच्य ग्रंथों की सूची दी जाती है। इसके पश्चात् सहायक ग्रंथ, शब्दकोश, पत्र-पत्रिकाएं, पाण्डुलिपियां, साक्षात्कार, इन्टरनेट साइटें आदि की सूचना दी जाती है। ये सभी सूचियां आकारादि क्रम में होनी चाहिए। इसमें लेखक का नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का नाम, प्रकाशन स्थान, प्रकाशन वर्ष एवं संस्करण संख्या भी दी जानी चाहिए।'[111]

9. भाषा-शैली ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा का मत है- 'शोध-प्रबंध की भाषा-शैली साहित्यिक होनी चाहिए। अनावश्यक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रबंध की भाषा विषय के अनुकूल हो, उसमें पाण्डित्य प्रदर्शन न हो। शोध-प्रबंध में तटस्थता और निर्वैयक्तिकता का पालन किया जाए। 'मैं' शैली का प्रयोग न किया जाए।'[112]

---

[109] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011,** पूर्वोक्त, पृष्ठ-**81-82**

[110] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**82**

[111] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**82**

[112] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**82**

10. अशुद्धि-परिहार ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा लिखते हैं- 'शोध-प्रबंध में अशुद्धियां नहीं होनी चाहिए। शोधार्थी को अशुद्धियों के प्रति चौकस रहना चाहिए, वर्ना प्रबंध की शोभा मलिन हो जाएगी। जहां तक संभव हो अशुद्धियों का परिहार करना चाहिए, अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने की संभावना रहती है।'[113]

11. टंकण-कार्य ः

'प्रबंध का टंकण कार्य सुन्दर, स्पष्ट, पठनीय तथा प्रभावशाली होना चाहिए। टंकण जितना अच्छा होगा, शोध-प्रबंध का बाहरी रूप उतना ही सुंदर एवं आकर्षक बन पड़ेगा। अस्पष्ट एवं धूमिल टंकण भ्रामकता का संचार करते हैं, जिससे शोध-प्रबंध की गरिमा भंग होती है।'[114]

12. जिल्दबंदी ः

जिल्दबंदी के संबंध में डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा की टिप्पणी है- 'शोध-प्रबंध की जिल्द सुन्दर व मजबूत होनी चाहिए। सशक्त व उत्तम जिल्दबंदी से प्रबंध की शोभा दुगनी हो जाती है।'[115]

निष्कर्षतः शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन में शोध-प्रबंधों का इन बिन्दुओं की दृष्टि से अध्ययन किया जाता है। मुखपृष्ठ का शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप **2** इंच नीचे होता है। शीर्षक बड़ा हो तो उल्टी समाधि में दिया जाता है। मुखपृष्ठ पर उपाधि, संस्था, वर्ष तथा शोधार्थी का नाम होना चाहिए। प्राक्कथन में शीर्षक तथा विषय-चयन के प्रेरक तत्त्वों के परिचय के साथ सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की जाती है। विषय-सूची में अध्यायों और उप-अध्यायों के नाम के साथ पृष्ठ संख्या भी दी जानी चाहिए। अध्यायीकरण व्यवस्थितक्रम में होना चाहिए। मुखपृष्ठ को छोड़कर सभी पृष्ठों पर पृष्ठांकन करना अनिवार्य है। प्राक्कथन को अलग से पृष्ठ संख्या दी जाती है। पाद-टिप्पणी का निर्वाह शोध-प्रविधि के अनुसार करना चाहिए। पाद-टिप्पणी में सर्वप्रथम लेखक का नाम दिया जाता है। फिर वर्ष, कृति का नाम, प्रकाशन स्थान, प्रकाशन संस्था तथा पृष्ठ संख्या दी जाती है। अगर पाद-टिप्पणी बार-बार आए तो वही या पूर्वोक्त तथा पृष्ठ संख्या दी जाती है। अगर एक स्थान छोड़कर आए तो लेखक का नाम, वर्ष, पूर्वोक्त तथा पृष्ठ संख्या दी जानी

---

[113]शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**82**

[114] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**82-83**

[115] पूर्वोक्त, पृष्ठ-**84**

चाहिए। उपसंहार में शोध-विषय का सार, निर्णय एवं उपलब्धियां तथा शोध-संकेत दिए जाते हैं। सहायक ग्रंथ-सूची में सबसे पहले आलोच्य ग्रंथों का विवरण दिया जाता है। उसके बाद सहायक ग्रंथ, शब्दकोश, पत्र-पत्रिकाएं, साक्षात्कार तथा इंटरनेट साइटें आदि का वर्णन किया जाता है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सरल होनी चाहिए। 'मैं' शैली का प्रयोग नहीं करना चाहिए। शोधार्थी को अशुद्धियों का परिष्कार करना चाहिए। प्रबंध का टंकण सुन्दर तथा पठनीय होना चाहिए। प्रबंध की जिल्द मोटी तथा मजबूत होनी चाहिए। इन प्रतिमानों को ध्यान में रखकर यदि शोध-प्रबंध की सर्जना की जाए तो निश्चित ही वह उत्तम शोध-प्रबंध कहलायेगा।

2.5.3. शोध के संदर्भ में शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन का महत्त्व ः

डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा के अनुसार- 'विगत वर्षों में हिन्दी साहित्य में शोध-कार्य हो रहे हैं। शोध की दृष्टि से वह उत्तम तथा गतिशील होते हुए भी, कार्यविधि की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। आज हिन्दी शोध जिस स्थिति में खड़ा है, उसे निराशा की संज्ञा दी जा सकती है। उसमें जो प्रौढ़ता, गाम्भीर्य एवं नियमबद्धता आनी चाहिए, उसका अभाव खटकता है। इसका मुख्य कारण हिन्दी के क्षेत्र में "शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन" तथा "मानक व्यावहारिक कार्यविधि" की अपेक्षा है। किसी कार्य को बार-बार करने पर उस संबंधी कुछ विधि या तकनीक रूप ग्रहण कर लेती है। जिससे उस संबंधी कुछ नियम उभर कर सामने आते हैं। यह सही है कि हिन्दी साहित्य में मानक शोध-प्रविधि का विकास अभी तक नहीं हुआ है। निश्चित शोध-प्रविधि और शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन के अभाव में शोधार्थी विषय की रूपरेखा, संदर्भोल्लेख, उद्धरण आदि के संबंध में प्रायः त्रुटियां कर देता है।'[116]

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन से शोधार्थी अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल होंगे। यह विषय हिन्दी शोध क्षेत्र में नया अवश्य है, परन्तु शोध-चेतना की दृष्टि से बहुत आवश्यक है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि 'शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन' के अध्ययन से कृति का स्पष्ट तथा तटस्थ मूल्यांकन किया जा सकता है। इससे शोधार्थियों में शोध-प्रविधि का ज्ञान बढ़ेगा, जिससे उत्तम तथा प्रभावशाली शोध-प्रबंध निकल कर सामने आयेंगे। इससे शोध के जगत् में

---

[116] शर्मा, डॉ. ब्रह्मवेद, **2011**, पूर्वोक्त, पृष्ठ-**84-85**

स्तरहीनता में कमी आएगी। इससे अनावश्यक पिष्टपेषण तथा विषय के दोहराव से बचाव होगा। यही इसका उद्देश्य है।

इस प्रकार वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन का शोध के क्षेत्र में महत्त्व असंदिग्ध है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण में किसी पुस्तक, ग्रंथ, विषय, घटना, क्षेत्र आदि के बाहरी तथ्यों अथवा सूचना के वर्णन के साथ उनका आकारादिक्रम और वर्षानुसार सूचीकरण किया जाता है। इसमें प्राप्त तथ्य सही और पूर्ण होते हैं। वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रक्रिया में सर्वेक्षक सतर्क होकर सूचना या तथ्य इकट्ठा करता है। इसमें प्रमुख और गौण दोनों तथ्यों का समावेश होता है। इसमें लेखक की मूल बात का ही वर्णन किया जाता है। इसमें शोधार्थी से तटस्थता की अपेक्षा की जाती है।

इसमें विषय का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि सम्पूर्ण तथ्य उभर कर सामने आ जाते हैं। शोधार्थी को ये पता होना चाहिए कि उसे अपने विषय से संबंधित सामग्री कहां से इकट्ठी करनी है। उसे प्राप्त करने का कौन सा तरीका होगा और उसमें कौन-सी विधि का प्रयोग करना है।

वर्णनात्मक सर्वेक्षण करने से पहले शोधार्थी को उसकी योजना तैयार कर लेनी चाहिए। उसे सर्वेक्षण-पद्धति और क्षेत्र की भी अच्छी जानकारी होनी चाहिए। उसे ये ज्ञात होना चाहिए कि उसके शोध से संबंधित सामग्री कहां मिलेगी। शोध-ग्रंथों के वर्णनात्मक सर्वेक्षण में शोधार्थी के नाम से लेकर सहायक ग्रंथ-सूची तक का परिचय दिया जाता है। प्राप्त सूचना या तथ्यों को सूचीबद्ध करके विविध वर्गों में विभाजित किया जाता है। इसकी शैली आलोचना से परे होती है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए जाते हैं।

वर्णनात्मक सर्वेक्षण का उद्देश्य अज्ञात तथ्य को ज्ञात करना तथा ज्ञात तथ्यों का मूल्यांकन करना है। इसके द्वारा किसी भी क्षेत्र और विषय से संबंधी जानकारी सरलता से उपलब्ध हो जाती है। इससे विषय संबंधी ज्ञान एक ही स्थान पर मिल जाता है, जिससे समय बचता है। इसमें पुस्तक या ग्रंथ का विविध वर्गों के तहत वर्गीकरण किया जाता है। शोध-लेखन के संदर्भ में इससे अनावश्यक पिष्टपेषण तथा विषय के दोहराव संबंधी संभावनाएं ख़त्म हो जाएंगी।

वर्णनात्मक सर्वेक्षण में सूचीकरण का महत्त्व असंदिग्ध है। इस शोध-प्रबंध में पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में संपन्न पीएच. डी. संबंधी शोध-कार्य का वर्षानुक्रम तथा लेखक

आकारादिक्रम में सूचीकरण दिया गया है। यह सूचीकरण भावी शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। इससे उन्हें अपने शोध का विषय चुनने में सहायता मिलेगी। वर्णनात्मक सर्वेक्षण में वर्गीकरण का अहम रोल है। इसमें प्राप्त सामग्री को समानता और असमानता के आधार पर अनेक वर्गों में विभाजित किया जाता है।

इसी प्रकार शोध के क्षेत्र में शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन का अपना एक महत्त्व है। शोध के क्षेत्र में उत्कृष्ट और उत्तम शोध-प्रबंध लिखने में शोध-प्रविधि का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। इसके अभाव में शोध-प्रबंधों की गरिमा का हनन होता है। मानक शोध-प्रविधि के अनुसार लिखे जाने वाले शोध-प्रंबंध, उत्तम शोध-प्रबंध की श्रेणी में आते हैं। शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन में शोध-प्रबंध का मुखपृष्ठ से लेकर सहायक ग्रंथ-सूची तक का मूल्यांकन किया जाता है। मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक **2** इंच नीचे होता है। अगर शीर्षक एक पंक्ति से बड़ा हो तो उसे उल्टी समाधि में दिया जाता है। मुखपृष्ठ पर उपाधि, संस्था, वर्ष तथा शोधार्थी का नाम होना चाहिए। प्राक्कथन में विषय-चयन को प्रेरित करने वाले कारणों का परिचय दिया जाता है तथा साथ में सहयोगियों के प्रति सहानुभूति प्रकट की जाती है। विषय-सूची शोध-प्रविधि के अनुरूप होनी चाहिए। उसमें अध्यायों और उप-अध्यायों के समावेश के साथ, पृष्ठ संख्या का विवरण अवश्य देना चाहिए। मुखपृष्ठ को पृष्ठ को छोड़कर सभी पृष्ठों पर पृष्ठांकन करना जरूरी है। प्राक्कथन को अलग से पृष्ठ संख्या दी जानी चाहिए। पाद-टिप्पणी का प्रयोग शोध-प्रविधि के नियमानुसार करना चाहिए। पाद-टिप्पणी में लेखक का नाम, वर्ष, कृति का नाम, प्रकाशन स्थान, प्रकाशन संस्था तथा पृष्ठ संख्या दी जाती है। अगर वही पाद-टिप्पणी बार-बार आए तो वही या पूर्वोक्त तथा पृष्ठ संख्या दी जाती है। अगर एक स्थान छोड़कर आए तो लेखक का नाम, वर्ष, पूर्वोक्त तथा पृष्ठ संख्या दी जाती है। उपसंहार में शोध-विषय का सारांश दिया जाता। शोध संबंधी प्राप्त निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया जाता है। अंत में भावी शोधार्थियों के लिए शोध-संकेत दिए जाते हैं। सहायक ग्रंथ-सूची में पहले-पहल आलोच्य ग्रंथों का ब्यौरा दिया जाता है। उसके बाद सहायक ग्रंथ, शब्दकोश, पत्र-पत्रिकाएं, साक्षात्कार तथा इंटरनेट साइटें आदि का परिचय दिया जाता है। प्रबंध की भाषा सुन्दर तथा प्रभावशाली होनी चाहिए। 'आत्मनिष्ठशैली' के प्रयोग से बचना चाहिए।

शोधार्थी को अशुद्धियों के प्रति सतर्क रहना चाहिए। प्रबंध का टंकण स्पष्ट तथा प्रभावशाली होना चाहिए। प्रबंध की जिल्द बढ़िया तथा सशक्त होनी चाहिए।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन के अध्ययन से शोध-प्रबंध या पुस्तक का सही तथा पूर्ण तटस्थ मूल्यांकन किया जा सकता है। इससे शोधार्थियों में शोध-प्रविधि का ज्ञान बढ़ेगा, जिससे उत्तम तथा प्रभावशाली शोध-प्रबंध लिखें जायेंगे। इससे पिष्टपेषण तथा विषय के दोहराव से बचाव होगा। शोध-प्रबंध के संदर्भ में शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन का यही उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का उद्देश्य वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन के द्वारा पश्चिमोत्तरी भारत में सम्पन्न पीएच.डी. शोध-कार्य का सामान्य परिचय देना है। जिससे भावी शोधार्थी लाभ उठा सकें तथा प्रस्तुत कालावधि में उपलब्ध शोध-कार्य का एक रिकॉर्ड तैयार किया जा सके।